आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2024
वर्ष 10 अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2024, पृ. 51–56

ए० एम० शाह एवं उनका समाजशास्त्र में योगदान

सत्या मिश्रा*

ए० एम० शाह उन प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्रियों में से एक हैं जो गुजरात में अपने किये गये परिवार के अध्ययन के लिए जाने जाते हैं। ए० एम० शाह का पूरा नाम है 'अरविंद मणिलाल शाह'। ये दिल्ली सम्प्रदाय के अग्रणी समाजशास्त्री रहे हैं जिन्हें पुस्तकीय तथा क्षेत्राधारित परिप्रेक्ष्यों को समन्वित करने का श्रेय दिया जाता है। ए० एम० शाह प्रसिद्ध समाजशास्त्रर एम० एन० श्रीनिवास के शिष्य रहे हैं। 1952 के आस–पास शाह, श्रीनिवास के सानिध्य में रहे। 1958 में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में वे समाजशास्त्र विषय के शिक्षक बन गये। उनके विभिन्न लेखों का विवरण निम्नाँकित हैं–

1. कास्ट इकॉनॉमी एण्ड टेरेटॅरी इन द सेंट्रल पंच महल्स (यह लेख 1955 में महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी, बड़ौदा से प्रकाशित होने वाले एक जर्नल में प्रकाशित हुआ था)।
2. अ डिस्पर्सड हेमलेट इन द पंच महल्स (यह आलेख 1955 में द इकॉनॉमिक वीकली में प्रकाशित हुआ था)।
3. सोशल एंथ्रोपॉलॉजी एण्ड द स्टडी ऑफ हिस्टॉरिकल सोसायटीज़ (इस लेख का प्रकाशन 1959 में द एकॉनॉमिक वीकली में हुआ था)।
4. बेसिक टर्मर्स एण्ड कॉन्सेप्ट्स इन द स्टडी ऑफ फैमिली इन इंडिया (यह लेख इंडियन इकॉनॉमिक एण्ड सोशल हिस्ट्री रिव्यू में 1964 को प्रकाशित हुआ था)।
5. पॉलिटिकल सिस्टम इन एटीन्थ सेंचुरी गुजरात, इन्क्वायरी (इस लेख का प्रकाशन 1964 में हुआ था)।

उक्त प्रसिद्ध लेखों के अतिरिक्त ए० एम० शाह के लगभग 10 समाजशास्त्रीय लेख गुजराती भाषा में प्रकाशित हुए थे। शाह यद्यपि अपने परिवार संबंधी अध्ययन के लिए प्रसिद्ध

---

*प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0 कालेज, लखनऊ

हैं तथापि उनके अध्ययन बहुआयामी प्रकृति के रहें हैं। ए० एम० शाह की कतिपय प्रसिद्ध पुस्तकें निम्नलिखित हैं–

1. 'द हाउस होल्ड डायमेंशन ऑफ द फैमिली इन इंडिया : अ फील्ड स्टडी इन अ गुजरात विलेज एण्ड अ रिव्यू ऑफ अदर स्टडीज़'। यह पुस्तक 1974 में प्रकाशित हुई तथा वर्ष 2014 में इन पुस्तक का पुनर्प्रकाशन 'द राइटिंग्स ऑफ ए० एम० शाह : द हाउसहोल्ड एण्ड फैमिली इन इंडिया' शीर्षक से किया गया।
2. 'द फैमिली इन इंडिया : क्रिटिकल एसेज़' 1998 में प्रकाशित हुई तथा चर्चित रही।
3. 'डिविजन एण्ड हायरेरिकी' 1988 में प्रकाशित होने वाली पुस्तक है जिसमें आई० पी० देसाई सह–लेखक थे।
4. 'एक्सप्लोरिंग इंडियाज़ रूरल पास्ट' नामक पुस्तक वर्ष 2002 में प्रकाशित हुई।
5. 'सोशियोलॉजी एण्ड हिस्ट्री' (2017)
6. 'द लिगेसी ऑफ एम० एन० श्रीनिवास हिज कॉट्रीब्यूशन टू सोशियोलॉजी एण्ड सोशल एंथ्रोपॉलॉजी इन इंडिया' (2019)।

इस पुस्तक में ए० एम० शाह के पाँच अध्यायों का संकलन है तथा उनका एम० एन० श्रीनिवास के साथ एक साक्षात्कार भी दिया गया है।

7. 'एसेज़ ऑन द फैमिली एण्ड द एल्डरली'
8. 'द स्ट्रक्चर ऑफ इंडियन सोसायटी देन एण्ड नाउ' (2022)

उक्त पुस्तकों की रचना के अतिरिक्त ए० एम० शाह ने भारत के समाज शास्त्रीय इतिहास पर प्रथम शोध प्रपत्र लिखा था। उन्हें वर्ष 2009 में भारतीय समाजशास्त्र परिषद (ISS) द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार प्रदान किया गया। इससे पूर्व शाह वर्ष 1992–93 में इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी के अध्यक्ष भी रहे थे। ए० एम० शाह के सम्मान में वर्ष 2010 में एक फेस्ट स्क्रिप्ट प्रकाशित की गई थी, जिसका शीर्षक था– "अंडर स्टैंडिंग इंडियन सोसायटी : पास्ट एण्ड प्रेजेंट (एसेज फॉर ए० एम० शाह)"। इसका संपादन किया था–बी० एस० बवीस्कर तथा तुलसी पटेल ने।

ए० एम० शाह के अकादमिक योगदान को दृष्टिगत हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उन्हें 'स्वामी प्रणवानन्द अवार्ड' से तथा दिल्ली विश्वविद्यालय ने 'डिस्टिंग्यूस्ड सर्विस अवॉर्ड' प्रदान किया।

ए० एम० शाह द्वारा निष्पादित किये गये विविध अध्ययनों में से इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध अध्ययन रहा– उनके द्वारा किया गया गुजरात में परिवार का अध्ययन। इनका यह अध्ययन इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'द हाउसहोल्ड डायमेंशन ऑफ द फैमिली इन इंडिया : अ फील्ड स्टडी इन अ गुजरात विलेज एण्ड अ रिव्यू ऑफ अदर स्टडीज़' के रूप में प्रकाशित हुआ। भारतीय परिवार का ए० एम० शाह का विश्लेषण संरचनात्मक एवं अन्तर्क्रियावादी रहा

है। ए० एम० शाह द्वारा विरचित यह अध्ययन पुस्काकार रूप में 1974 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की प्रस्तावना एम० एन० श्रीनिवास ने लिखी है। जिसमें श्रीनिवास ने इसे मील का पत्थर 'Milestone Study' कहा है। ए० एम० शाह ने इस पुस्तक के प्राक्कथन में अपने अध्ययन की रूपरेखा प्रस्तुत की है। इनके अनुसार शाह ने मई 1955 से जून 1958 तक क्षेत्र कार्य किया और तथ्य संकलित किये। इस अध्ययन में राधवानाज जोकि केन्द्रीय गुजरात का एक गाँव था, उसके साथ–साथ 'वहिवांचा बारोट्स' (वहिवांचा बाड़ौत) जाति का भी अध्ययन किया है और इससे संबंधित तथ्य ऐतिहासिक अभिलेखों तथा ऑफिशियल रिकॉर्डस से प्राप्त किये। "वहिवांचा बारोट' जाति पारंपरिक रूप से इतिहासकार, वंशावलीज्ञ एवं पौराणिक कथाकार जाति है। बहिवांचा बारोट जाति पर अध्ययन के दौरान ही ए० एम० शाह तथा श्रीनिवास द्वारा "The Vahivancha Borots of Gujrat : A Caste of Genealogists and Mythographer" शीर्षक से एक शोधप्रपत्र लिखा गया जोकि मिल्टन सिंगर द्वारा संपादित पुस्तक 'Traditional India : Structure and Change' में प्रकाशित हुआ।

'The Household Dimension of the family in India : A field study in a Gujrat Village and a review of other studies' इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री को दो भागों में प्रस्तुत किया गया है–

भाग 1. The Household in a Gujrat Village अर्थात् गुजरात के एक गाँव में 'परिवार' शीर्षक से लिखा गया है। भाग 1 में 5 अध्याय सम्मिलित हैं– परिचयात्मक टिप्पणी के अतिरिक्त इस भाग के निम्नलिखित अध्याय हैं–

1. प्रारम्भिक विचार
2. उत्प्रवासी परिवार
3. जटिल परिवार
4. सरल परिवार
5. रूपरेखा या सिंहावलोकन– परिवार, अन्य सामाजिक संरचना तथा सामाजिक परिवर्तन।

भाग 2. – ए० एम० शाह ने अपनी पुस्तक के भाग दो में हाउसहोल्ड या परिवार का अध्ययन तथा भारत में परिवार के अन्य संबंधित आयाम, परिचयात्मक टिप्पणी पर प्रकाश डाला है। इस भाग के अंतर्गत निम्नलिखित अध्यायों की रचना की गई है–

6. भारतीय परिवार के समाजशास्त्रीय अध्ययन में मूलभूत शर्तें।
7. विधि एवं न्यायशास्त्र में भारतीय परिवार।
8. भारतीय परिवार का समाजशास्त्रीय अध्ययन।
9. निष्कर्ष

ए० एम० शाह का मानना था कि 'परिवार' का 4 विभिन्न अर्थों में अर्थ व्यक्त किया जाता है। उन्होंने 1959 में प्रकाशित 'ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' के तीसरे संस्करण का उद्धरण देते हुए स्पष्ट किया है कि 'परिवार' के 4 अर्थ हैं, 'हाउस होल्ड' भी उनमें से एक है। परिवार, हाउसहोल्ड अथवा घर पर्याय है। भाग–1 के अध्याय एक–प्रारम्भिक विचार में इन्होंने गाँव संबंधी जनसंख्यात्मक तथ्य उल्लिखित किये हैं। इन्होंने इसी अध्याय में परिवार को प्रमुख रूप से दो प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया है–सरल एवं जटिल परिवार। इन्होंने 'Parental family term' भी प्रयुक्त किया जिसमें एक व्यक्ति, उसकी पत्नी और अविवाहित बच्चे सम्मिलित होते हैं। यहीं पर 'शाह' ने सरल परिवार के 6 संभावित संघटक स्पष्ट किये हैं–

1– पति, पत्नी एवं अविवाहित बच्चे
2– पति एवं पत्नी
3– पिता एवं अविवाहित बच्चे
4–माता एवं अविवाहित बच्चे
5– अविवाहित भाई एवं बहनें
6– एक अकेला व्यक्ति अथवा महिला

शाह ने सरल परिवार के ये 6 प्रकार बताये हैं। उत्प्रवासी परिवारों की संख्या गाँव में 36 थीं। इनमें से 34 परिवार मध्य गुजरात के कस्बों एवं गाँवों से आकर बसे थे शेष दो परिवार अन्य सुदूर क्षेत्रों से आये थें। शाह ने उत्प्रवासी परिवारों का गाँव के साथ संबंध स्पष्ट किया जिसमें से 20 परिवार स्वयं को गाँव से विलग रखते थे और आत्मनिर्भर थे जबकि 16 परिवार गाँव से सम्बद्ध थे एवं जुड़े थे।

अध्याय 3 में शाह ने जटिल परिवारों की विवेचना की है। 283 घरों में से 91 घर जाटिल थे। शाह ने 6 प्रकार के 'A typical compositions' वाले अलग या विचित्र प्रकार के घरों को पाया यथा–

1– बड़ा भाई एवं उसकी पत्नी, छोटा भाई एवं उसकी पत्नी, छोटे अविवाहित भाई।
2– व्यक्ति, उसकी पत्नी एवं अविवाहित बच्चे एवं उसके पिता के विधुर भाई।
3– व्यक्ति, पत्नी एवं अविवाहित बच्चे, उसकी विधवा माँ एवं पिता के विधुर भाई।
4– व्यक्ति, उसकी पत्नी, उसके दो कुंवारे भाई, विधवा माँ एवं पिता के भाईयों की विधवा।
5– व्यक्ति, उसकी पत्नी एवं पिता की विधवा माँ।
6–व्यक्ति, उसकी पत्नी, उसका एक विवाहित पुत्र एवं अन्य अविवाहित बच्चे एवं उसकी विधवा माँ।

इस विवरण का शाह ने वंशावलीय चार्ट बनाया है। शाह ने जटिल परिवार में आपसी संबंधों का भी गहन विश्लेषण किया है। इन्होंने ऐसे घर की विवेचना भी की जिसमें एक विवाहित व्यक्ति तथा एक या अधिक अविवाहित भाई–बहन रहते हैं।

अध्याय–4 में शाह ने 192 सरल परिवार बताये हैं एवं उनकी विस्तृत व्याख्या की है।

अध्याय–5 में शाह ने जाति तथा परिवार प्रतिमानों की व्याख्या की है अर्थात् विभिन्न जातियों में सरल एवं जटिल पारिवारिक संरचना का विश्लेषण किया हैं। इसी अध्याय में राध ावानाज गाँव में 'Household Patterns' में ग्राम तथा नगर में अंतर की व्याख्या की है।

अध्याय–6 में जो कि Basic terms in the sociological study of the Indians family शीर्षक से शाह ने प्रारम्भिक परिवार या Elementary family और Parenteral family का उल्लेख करते समय Complete Elementary family तथा Incomplete Elementary family में भेद किया है। इस प्रकार से शाह ने परिवार के दो प्रकार बतायें हैं–

1. पूर्ण प्रारम्भिक परिवार (complete Elementary family)
2. अपूर्ण प्रारम्भिक परिवार (incomplete Elementary family)

अध्याय–7 विधि एवं न्यायशास्त्र में भारतीय परिवार की व्याख्या की गई है शाह के अनुसार हिंदू विधि को तीन ऐतिहासिक चरणों में वर्गीकृत कर देखा जा सकता है–

1. शास्त्रीय हिन्दू कानून
2. एंग्लो– हिंदू कानून
3. आधुनिक हिंदू कानून

इसमें प्रथा और कानून की दृष्टि से संयुक्त परिवार की व्याख्या की है।

अध्याय – 8 जो कि 'The Sociological Study of the Indian family' शीर्षक से लिखा गया है इस अध्याय में भारतीय परिवार संबंधी पूर्व अध्ययनों का विहंगावलोकन किया गया है। इसके अंतर्गत शाह ने हेनरी मैन की परिवार की व्याख्या की समीक्षा की है तथा भारतीय परिवार के भारतशास्त्रीय अथवा 'Indological View' की विवेचना की। जनगणना 1867 से 1941 तक के परिवार की व्याख्या की है। एल० एस० एस० ओ०' मैले के परिवार पर किये गये कार्य 'Indian Social Heritage' और इस पुस्तक के एक अध्याय 'The family' की समीक्षा की। भारतविद्याशास्त्रीय उन्मुखताओं वालें समाजशास्त्रीय अध ययनों तथा समकालीन आनुभविक अध्ययनों पर प्रकाश डाला। साथ ही 1951 – 1961 की जनगणना में परिवार की व्याख्या की है।

अध्याय–9 निष्कर्ष के रुप में लिखा गया है जिसमें Households और उनमें आ रहे परिवर्तनों की व्याख्या की है। सयुंक्त परिवार की एक सयुंक्त सम्पत्तिसमूह के रुप मे व्याख्या की हैं। जाति, ग्राम्य–नगरीय समुदाय तथा परिवार की भी विवेचना की हैं। परिवार में अर्न्तवैयक्तिक संबंधों की व्याख्या की है। आर्थिक कारक एवं परिवर्तन की व्याख्या की है।

भारतीय समाजशास्त्र पर भी ए० एम० शाह नें अपने विचार प्रतिपादित किये हैं। ए० एम० शाह ने भारत के समाजशास्त्रीय इतिहास पर शोध प्रपत्र लिखा। उनकी प्रस्थापनायें निम्नाँकित हैं–

1. इन्होंने मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र के पारस्परिक संबंधों तथा उसके क्षेत्रीय संदर्भों का विश्लेषण किया।
2. क्षेत्रीय समाजशास्त्रीय ज्ञान को विश्वकोशीय बनाने पर बल दिया। उनके अनुसार भाषा भारतीय समाजशास्त्र ज्ञान के विकास में बाधक न हो; उसका प्रचार–प्रसार विश्व–स्तर पर हो।
3. विभिन्न समाजशास्त्रीय अध्ययन के संस्थानों की स्थापना व विकास किया जाय जहाँ विषय का अध्यापन एवं अनुसंधान कार्य किया जा सके।
4. शाह ने गुजरात में समाजशास्त्र के इतिहास व विकास पर दृष्टिपात किया और इसकी व्याख्या तीन चरणों में की है–

प्रथम चरण – 19वीं शताब्दी के मध्य से 1920 तक जिसमें औपचारिक अध्ययन अनुसंधान नहीं होता था तथा उपलब्ध साहित्य की प्रकृति सामाजिक थी।

दूसरा चरण – 1920 से 1950 तक इस समय बम्बई सम्प्रदाय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। के० एम० कपाड़िया, आई० पी० देसाई, ए० आर० देसाई का भी उन्होंने उदाहरण दिया।

तीसरा चरण – शाह के अनुसार स्वतंत्रता पश्चात् से अब तक का रहा है।

साराँशतः कहा जा सकता है कि ए० एम० शाह ने अपने बहुविध अध्ययनों द्वारा भारतीय समाजशास्त्र के विकास में अपना योगदान दिया। ए० एम० शाह के अध्ययनों की निम्न विशेषताएँ रही हैं– एक, ऐतिहासिक सामग्री एवं आनुभविक सामग्री का समन्वय तथा दूसरा, संरचनात्मक, ऐतिहासिक सामग्री एवं भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों के समन्वित उपयोग पर बल।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शाह, ए० एम० : 1973; द हाउस होल्ड डाइमेंशन ऑफ द फैमिली इन इंडिया : अ फील्ड स्टडी इन अ गुजरात विलेज एण्ड अ रिव्यू ऑफ अदर स्टडीज, ओरिएंट लौंगमेन, नई दिल्ली एण्ड युनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस, बर्कले।

शाह, ए० एम० : 2019; 'द स्ट्रक्चर ऑफ इंडियन सोसायटी देन एण्ड नाऊ (द्वितीय संस्करण), रुटलेज टेलर एण्ड फैन्सिस ग्रुप, लंदन।

बाविस्कर, वी० एस० तथा पटेल, तुलसी : 2018; अंडरस्टैंडिंग इंडियन सोसायटी : पास्ट एण्ड प्रेजेंट, ओरिएंट ब्लैक स्वान प्रा० लि०।